तृतीय अध्याय

असम तथा नगाँव में हिन्दी शिक्षण

असम एक अहिंदी भाषी प्रदेश है। यहाँ बोलचाल में हिन्दी भाषा का प्रयोग बहुत कम होता है। शिक्षा में भी हिन्दी भाषा का प्रयोग यहाँ के सरकारी विद्यालयों में कुछ पाँचवीं कक्षा से तथा कुछ छठीं कक्षा से शुरू होती है। असम में हिन्दी भाषा की शिक्षा द्वितीय भाषा के रूप में दी जाती है। नगाँव जनपद के अन्तः उच्च विद्यालय परीक्षा परिषद द्वारा जो नए पाठ्यक्रम बनाए गए उनके अनुसार कक्षा आठवीं में हिन्दी की शिक्षा को अनिवार्य माना गया। इस पाठ्यक्रम को असम माध्यमिक शिक्षा परिषद (SEBA) के पाठ्यक्रम के अनुसार ध्यान में रखकर बनाया गया है। प्रस्तुत अध्याय में असम तथा नगाँव में हिन्दी शिक्षण की सामान्य रूपरेखा को दिखाने की कोशिश की गई है। असम में हिन्दी की नींव एवं उसके विकास को दिखाते हुए हिन्दी भाषा की स्थिति की विवेचना की गई है तथा हिन्दी भाषा शिक्षण पर प्रकाश डाला गया है।

3.1 असम तथा नगाँव में हिन्दी शिक्षण की रूपरेखा

असम उत्तर-पूर्वी भारत का एक राज्य है। असम उत्तर-पूर्वी भारतीय राज्यों तथा सुरम्य पर्वत श्रेणियों से घिरा है। इस राज्य के उत्तर में अरुणाचल प्रदेश, पूर्व में नागालैंड तथा मणिपुर, दक्षिण में मिज़ोरम, मेघालय, त्रिपुरा एवं पश्चिम में सिक्किम तथा पश्चिम बंगाल स्थित है। सामान्य रूप से माना जाता है कि असम नाम संस्कृत से लिया है जिसका शाब्दिक अर्थ है, वह भूमि जो समतल नहीं है। कुछ लोगों की मान्यता है कि 'असम' संस्कृत के शब्द 'अस्म' अथवा 'असमा', जिसका अर्थ असमान है का अपभ्रंश है। कुछ विद्वानों का मानना है कि 'असम' शब्द संस्कृत के 'असोमा' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है अनुपम अथवा अद्वितीय। ऑस्ट्रिक, मंगोलियन, द्रविड़ और आर्य जैसी विभिन्न जातियाँ प्राचीन काल से इस प्रदेश की पहाड़ियों और घाटियों में समय-समय पर आकार बसीं और यहाँ की मिश्रित संस्कृति में अपना योगदान दिया। इस तरह असम में

संस्कृति और सभ्यता की समृद्ध परम्परा रही है। कुछ लोग इस नाम की व्युत्पत्ति 'अहोम' (सीमावर्ती बर्मा की एक शासक जनजाति) से भी बताते हैं।

असम में असमिया और बोड़ो प्रमुख क्षेत्रीय और आधिकारिक भाषाएँ हैं। बंगला बराक घाटी के तीन जिलों में आधिकारिक दर्जा रखती है और राज्य की दूसरी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। असमिया प्राचीन कामरूप और मध्ययुगीन राज्यों जैसे कामतापुर, कछारी, सुतीया, बोरही, आहोम और कोच राज्यों में लोगों की आम भाषा रही है। 7वीं-8वीं ई॰ में लिखी गई लुइपा, सरहपा जैसे कवियों के कविताओं में असमिया भाषा के निशान पाए जाते हैं।

असम की भाषाएँ 2001 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित हैं -

1.असमिया (48.8%)

2.बंगला (27.5%)

3.बोड़ो (4.8%)

4.नेपाली (2.12%)

5.हिन्दी (5.88%)

6.अन्य (11.8%)

इसको रेखाचित्र द्वारा समझाया गया है -

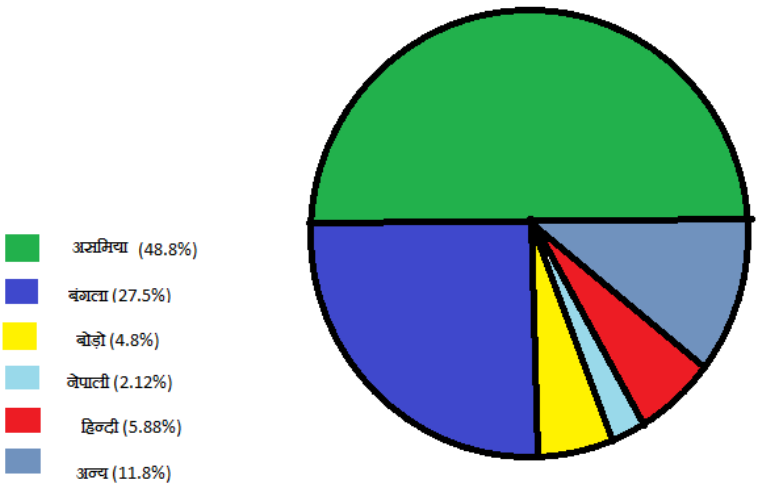

असम में छह से बारह वर्ष की उम्र तक के बच्चों के लिए माध्यमिक स्तर तक अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। असम के विश्वविद्यालयों के बारे में एक सामान्य ढाँचा नीचे प्रस्तुत है -

क्रमांक	विश्वविद्यालय	स्थान	स्थापित	श्रेणी
1	कॉटन स्टेट यूनिवर्सिटी	गुवाहाटी	1901	राज्य सरकार
2	गुवाहाटी विश्वविद्यालय	गुवाहाटी	1948	राज्य सरकार
3	डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय	डिब्रूगढ़	1965	राज्य सरकार
4	असम कृषि विश्वविद्यालय	जोरहाट	1968	राज्य सरकार
5	असम यूनिवर्सिटी	सिलचर	1994	केन्द्रीय
6	तेजपुर विश्वविद्यालय	तेजपुर	1994	केन्द्रीय

7	कृष्णकांत हैंडिक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी	गुवाहाटी	2007	राज्य सरकार
8	असम डॉन बोस्को विश्वविद्यालय	गुवाहाटी	2009	निजी
9	असम डाउन टाउन विश्वविद्यालय	गुवाहाटी	2010	निजी
10	काज़ीरंगा विश्वविद्यालय	जोरहाट	2012	निजी
11	महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय	नगाँव	2013	राज्य सरकार

असम में 35 जनपद हैं जो निम्नलिखित हैं -

1. दिमा हसाओ
2. करीमगंज
3. कार्बी आंगलांग
4. कोकराझार
5. गोलाघाट
6. काछाड़
7. गोवालपारा
8. जोरहाट
9. डिब्रूगढ़
10. तिनसुकिया

11.दरंग

12.धुबरी

13.धेमाजी

14.नलबाड़ी

15.नगाँव

16.बरपेटा

17.बंगाईगाँव

18.मोरिगाँव

19.लखिमपुर

20.शिवसागर

21.शोणितपुर

22.हैलाकांडी

23.बक़सा

24.उदालगुड़ी

25.चिरांग

26.कामरूप महानगर

27.विश्वनाथ

28.चराईदेउ

29.होजाई

30.दक्षिण सालमारा - मनकछर

31.पश्चिम कार्बी आंगलांग

32.पूर्वी कामरूप

33.दक्षिण कामरूप

34.माजुली

3.1.1नगाँव जनपद का सामान्य परिचय -

नगाँव भारत के असम प्रान्त के नगाँव जनपद का एक नगर है। यह गुवाहाटी से 120 किमी पूरब में पाँचवां सबसे बड़ा नगर है। नगाँव कृषि व्यापार केन्द्र है। इसके आसपास का क्षेत्र ब्रह्मपुत्र नद घाटी का एक हिस्सा है और इसमें कई दलदल और झीलें हैं, जिनमें से कई मत्स्यपालन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इसके इर्द-गिर्द के जंगल सागौन व साल की इमारती लकड़ियाँ और लाख उपलब्ध कराते हैं। कृषि उत्पादों में चावल, जूट, चाय और रेशम शामिल हैं। यहाँ का प्रमुख नद ब्रह्मपुत्र है जो उत्तरी सीमा पर बहता है। इसके अतिरिक्त अन्य कई छोटी नदियाँ भी यहाँ बहती हैं। धान मुख्य उपज है। चाय उद्योग के अतिरिक्त केवल कुछ घरेलू उद्योग धंधे हैं, जिनमें सूती एवं रेशमी कपड़े बुनना, आभूषणों के काम, चटाइयाँ तथा टोकरियाँ बनाना, पीतल के बर्तन बनाना आदि मुख्य हैं।

2013 की गणना के अनुसार नगाँव जनपद में 276 शासकीय विद्यालय (provincialised schools) हैं जिनमें से 57 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (higher secondary schools) हैं, 140 उच्च विद्यालय (high schools) हैं और 79 नए शासकीय विद्यालयों को शामिल किया गया है।

3.1.2 असम के विद्यालयों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम

नगाँव जनपद के अन्तः उच्च विद्यालय परीक्षा परिषद द्वारा 2014 में कक्षा 6 से 10 तक नए पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है। इस पाठ्यक्रम को असम माध्यमिक शिक्षा परिषद (SEBA) के पाठ्यक्रम के अनुसार ध्यान में रखकर बनाया गया है जिसके मुख्य बिन्दु निम्नलिखित हैं :

1.असम माध्यमिक शिक्षा परिषद के निर्देशानुसार कक्षा दसवीं की वार्षिक परीक्षा में केवल कक्षा दसवीं के पाठ्यक्रम से ही प्रश्न होंगे।

2.कक्षा 6 से 7 तक के छात्र-छात्राओं को मौलिक ज्ञान देने के उद्देश्य से मौलिक शिक्षा की व्यवस्था रहेगी।

3.कक्षा आठवीं में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होगी।

4.कक्षा 6 से 7 तक 'सुचित्र कला शिक्षा' (art education) को भी विषय के रूप में विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा।

3.2 असम में हिन्दी की नींव और विकास

भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में हिन्दी का प्रचार-प्रसार सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण सं॰ 690 वि॰ से ही माना जाना चाहिए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने ग्रन्थ *'हिन्दी साहित्य का इतिहास'* में इस मत की पुष्टि करते हुए लिखा है -

"अपभ्रंश या प्राकृताभास हिन्दी के पद्यों का सबसे पुराना पता तांत्रिक और योगमार्गी बौद्धों की साम्प्रदायिक रचनाओं के भीतर विक्रम की सातवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में लगता है।"[1]

शुक्ल जी के अनुसार सिद्धों में सरहपा सबसे पुराने हैं एवं उनकी रचनाओं में प्राकृताभास हिन्दी के रूप मिलते हैं। आचार्य शुक्ल सहित बहुत से विद्वान सरहपा को कामरूप जिले (असम) के रानी (राणी) गाँव के निवासी मानते हैं।

ऐसा माना जाता है कि सरहपा के अतिरिक्त लुइपा, करुपा, कुक्कुरिपा, तांतिपा, महीधरपा आदि सिद्धाचार्य भी असम के ही निवासी थे। अतः हिन्दी साहित्य के आरम्भिक काल में भाषा एवं साहित्य की दृष्टि से इन सिद्धाचार्यों की अहम भूमिका रही है। इनका प्रभाव सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक पूर्वोत्तर क्षेत्र में व्यापक रूप से माना जाता है। इन सिद्धाचार्यों ने भाषा तथा साहित्य के साथ, तत्कालीन समाज, संस्कृति एवं धर्म को भी प्रभावित किया था। इन्हीं से प्रभावित होकर भौतिक सुख-सुविधाओं की तिलांजलि दे डाली थी। इस प्रकार हिन्दी के प्रारम्भिक रूप को समझने में सिद्धाचार्यों की रचनाएँ आधारभूत सामग्री हमें जिन सिद्धाचार्यों से मिलती है, उनमें से अधिकांश असम के ही निवासी थे।

जब पूरे भारतवर्ष में संत-भक्त कवियों द्वारा ब्रजभाषा में रचनाएँ की जा रही थीं तब महापुरुष शंकरदेव ने यह अनुभव किया कि असम को शेष भारत के साथ सांस्कृतिक रूप से जोड़े रखने के लिए भी ब्रजभाषा में लिखना आवश्यक है। उनकी इसी महान सोच का परिणाम है - ब्रजावली में रचित उनकी रचनाएँ। अतः असम में हिन्दी साहित्य के विकास का द्वितीय उत्थान महापुरुष शंकरदेव के आविर्भाव काल (सन् 1449-1568 ई॰) से प्रारंभ होता है। महापुरुष शंकरदेव जब भारत-भ्रमण को निकले तो विभिन्न तीर्थस्थलों की रचना करने के बाद असम लौटने पर ब्रजावली में बरगीतों की रचना की। ब्रजावली भाषा का वह रूप है जो मैथिली, बंगला, ब्रज तथा असमिया के मिश्रण से बनी हुई है। इसे ब्रजबुलि भाषा भी कहते हैं।

ब्रजबुलि भाषा का इतिहास केवल महापुरुष शंकरदेव तक ही सिमटकर नहीं रहा, बल्कि इसी भाषा में चौदहवीं से अठारहवीं सदी तक लगातार साहित्यिक रचनाएँ होती रही हैं।

महापुरुष शंकरदेव के बाद भी ब्रजबुलि भाषा के प्रचारकों की एक लंबी कतार हमें देखने को मिलती है जिनमें से उनके प्रिय शिष्य माधवदेव का नाम सर्वप्रथम आता है। इन कवियों के पास असमिया भाषा होते हुए भी इन्होंने ब्रजबुलि में रचनाएँ कीं क्योंकि ये भक्त कविगण सांप्रदायिक मनोवृत्ति से ऊपर थे। इन्होंने अपने विचारों को असम के बाहर प्रचारित करने के उद्देश्य से रचनाएँ कीं। इनमें राष्ट्रीय सौहार्द तथा राष्ट्रप्रेम की भावना व्याप्त थी।

19वीं शताब्दी में जोरहाट के एक पुलिस सुपरिन्टेंडेंट यज्ञाराम खारधरिया फुकन ने हिन्दी के प्रचार हेतु *'हिन्दी व्याकरण और अभिधान'* नामक पुस्तक लिखकर खड़ीबोली हिंदी को असम में स्थापित करने का प्रयास किया। इन्होंने यह पुस्तक सन् 1832 में लिखी थी, उस समय हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी व्याकरण में इतना काम नहीं हुआ था। असम में हिंदी को अनिवार्य तथा ऐच्छिक रूप में अध्ययन-अध्यापन कराने का शुभारंभ सर्वप्रथम भुवनचंद गोगोई ने किया था। इन्होंने सन् 1926 में असम के शिवसागर में 'असम पोलिटेकनिक इंस्टीट्यूशन' नाम का विद्यालय खोलकर उसमें हिंदी को अनिवार्य विषय के रूप में लागू किया। इसके उपरांत असम को लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै जैसा हिंदीसेवी व्यक्ति मिला। बरदलैजी की अध्यक्षता में 'हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना हुई। इस समिति की स्थापना के बाद हिंदी का प्रचार-प्रसार तीव्र गति से होने लगा। 11 सितंबर, 1938 की बैठक में डॉ॰ हरेकृष्ण दास एवं देवकांत बरुवा को 'हिंदी प्रचार समिति' का क्रमशः अध्यक्ष पद एवं मंत्री पद प्रदान किया गया।

असम में हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफ़ी विकास हुआ है। मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाएँ असम में सैकड़ों की संख्या में प्रकाशित हो रही हैं। कुछ प्रमुख दैनिक समाचार-पत्रों के नाम हैं - पूर्वांचल प्रहरी, सेंटिनल, पूर्वोदय, खबर।

इस प्रकार असम में हिंदी साहित्य-लेखन का इतिहास एक लंबा सफर तय कर चुका है। हिंदी केवल संपर्क भाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि साहित्यिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर चुकी है।

3.3 असम में हिंदी भाषा की स्थिति

पूर्वोत्तर भारत में अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं जिनकी अपनी-अपनी भाषा तथा बोलियाँ हैं जिनमें बोड़ो, संथाली, कछारी, जयंतिया, कोच, त्रिपुरी, गारो, राभा, देवरी, दिमासा, रियांग, लालुंग आदि प्रमुख हैं। इनमें से केवल बोड़ो और संथाली को भारतीय संविधान की अनुसूची आठ में भाषा के रूप में स्थान मिला है। पूर्वोत्तर भारत के राज्य असम और अरुणाचल को छोड़कर शेष राज्यों - मेघालय, त्रिपुरा, मिज़ोरम, मणिपुर, नागालैंड आदि में हिंदी की स्थिति लगभग एक जैसी है। इन राज्यों में अधिकतर लोग इनकी जनजातीय बोलियों तथा भाषाओं का प्रयोग करते हैं, लेकिन इनके सरकारी कामकाज अंग्रेज़ी भाषा में होते हैं। सभी राज्यों में हिंदी भाषा का प्रयोग केवल प्रवासी हिंदीवासियों द्वारा ही आपस में बात करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ का व्यावसायिक कारोबार भी हिंदी में होता है क्योंकि भारत के अनेक क्षेत्रों से आने वाले लोगों के साथ यहाँ के लोगों को भाषा के आदान-प्रदान के लिए हिंदी ही एकमात्र सुगम भाषा लगती है। इसके अलावा रिक्शा चालकों, कुलियों, रेल कर्मचारियों द्वारा हिंदी का काम चलाऊ प्रयोग होता है।

असम पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में जाने का प्रवेश द्वार या मुख्य द्वार है। अतः भारत के हर एक कोने से यहाँ लोग आते हैं। इस प्रकार भारतीय लोगों के आवागमन से यहाँ हिंदी का प्रयोग एक बोलचाल की भाषा के रूप में हुआ है। असम में भी लोग बातचीत के दौरान अपनी जनजातीय बोलियों का ही प्रयोग करते हैं, किंतु सरकारी कामकाज अंग्रेज़ी तथा असमिया में ही होता है। फिर भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी प्रचार

करने वाली सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओं के अतिरिक्त यहाँ के अनेक साहित्यकारों और प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं के कारण अन्य प्रदेशों की तुलना में यहाँ हिन्दी का अधिक प्रसार-प्रचार हुआ है। डॉ॰ गार्गीशरण मिश्र ने इस बात की पुष्टि करते हुए कहा है -

"यहाँ के श्रेष्ठ साहित्यकार श्री शंकरदेव, माधवदेव और उनके अनुयायियों ने मैथिली, ब्रज, असमिया मिश्रित 'ब्रजबुली' भाषा में अनेक गीतों और नाटकों का सृजन किया। इससे असमिया और हिंदी के बीच सेतु बना और दोनों भाषाएँ एक-दूसरे के नज़दीक आईं तथा दोनों के बीच अनुवाद का व्यापक सिलसिला प्रारम्भ हुआ। गांधी जी के हिन्दी प्रचार ने इसे प्रोत्साहित किया। इसके अंतर्गत कृष्ण नाथ शर्मा द्वारा 'हिन्दी रामायण' का असमिया में अनुवाद, यज्ञराम खारघरिया फुकन जी द्वारा तैयार किया गया हिन्दी-असमिया कोश, डॉ॰ बिरिंचि कुमार बरुवा द्वारा 'लक्ष्मी नारायण सुधांशु के काव्य में अभिव्यंजनावाद' का असमिया में अनुवाद, हरीनारायण दत्त बरुवा द्वारा वैष्णव ग्रन्थ 'चित्र भागवत' का असमिया में अनुवाद, कल नारायण देव तथा चक्रेश्वर भट्टाचार्य द्वारा हिन्दी से असमिया और असमिया से हिन्दी में किया गया अनेक कहानियों का अनुवाद तथा नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा हेम बरुवाजी के असमिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद और रजनीकान्त बरदलै के उपन्यास *'मिरी जियरी'* का हिन्दी अनुवाद उल्लेखनीय हैं। इसी क्रम में असम से प्रकाशित लगभग 35 पत्र-पत्रिकाओं ने भी हिन्दी के प्रसार-प्रचार में सहायता की। डिब्रुगढ़ से प्रकाशित पहला साप्ताहिक *'नव जागृति'* गुवाहाटी से प्रकाशित *'अकेला'* साप्ताहिक ने भी हिन्दी के प्रसार-प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया।"[2]

इस पारस्परिक अनुवाद प्रक्रिया से हिन्दी और असमिया के बीच निकटता बढ़ी और दोनों भाषाओं के विकास में भी सहायता मिली।

असम में हिन्दी भाषा के प्रसार में जो संस्था सबसे महत्त्वपूर्ण रूप में काम कर रही है वह है असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति। समस्त पूर्वोत्तर राज्यों में हिन्दी के विकास का उत्तरदायित्व इसी संस्था पर है। असम के अलावा मेघालय, मिज़ोरम, मणिपुर, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश में इसके शिक्षण केंद्र और परीक्षा केंद्र हैं। शिक्षण कार्य हेतु लगभग 80 प्रतिशत हिन्दी पाठ्यपुस्तकें यह समिति स्वयं मुद्रित कराकर देती है। असम सरकार ने सन् 1974 में असम के हिंदीभाषी विद्यालयों के लिए कक्षा 1 से कक्षा 10 तक और गैर हिंदीभाषी विद्यालयों के कक्षा 5 से कक्षा 12 तक सारी हिंदी पुस्तकों का निर्माण, प्रकाशन और विवरण इसी समिति को सौंपा है, जिसे यह बखूबी निभा रही है। इसी समिति की पत्रिका 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' सन 1951 से लगातार प्रकाशित हो रही है। वह असमिया भाषा की श्रेष्ठ रचनाएँ हिन्दी में और हिन्दी की श्रेष्ठ रचनाएँ असमिया में अनूदित कर प्रकाशित करती है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राज्य और केंद्र सरकार सन् 1960 से लगातार कालेजों में हिन्दी विभाग खुलवा रही है। वर्तमान में 45 शासकीय और 20 अशासकीय महाविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था है। अब तक गुवाहाटी विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय सिल्चर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय तेजपुर में हिन्दी विभाग खोले गए हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, राजभाषा विभाग आदि संस्थाएं भी हिन्दी के प्रचार प्रसार में संलग्न हैं। अब गुवाहाटी से हिन्दी में दैनिक पत्र निकलकर हिन्दी के लिए वातावरण तैयार कर रहे है। पूर्वांचल साहित्य परिषद भी हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में अपना योगदान दे रही है।

पाद टिप्पणी :

1.पुरी, मनोहर (प्र॰ सं॰) (2015), *स्मारिका* (10वां विश्व हिन्दी सम्मेलन), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली, पृ॰ 40

2.शइकीया, डॉ॰ क्षीरदा कुमार (2015), *द्विभाषी राष्ट्रसेवक*, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी, पृ॰ 19-20